कृति	:	**श्री भक्तामर विधान**
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	द्वितीय-2019 प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागरजी महाराज क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी ब्र. प्रदीप भैया जी
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी 9829076085 ब्र. आस्था दीदी 9660996425 ब्र. सपना दीदी 9829127533
संयोजन	:	ब्र. आरती दीदी 8700876822
प्रकाशक	:	साधु सेवा समिति हरिद्वार (उत्तराखण्ड) www.vishadsagar.com
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी, जयपुर 9413336017 2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 9416888879 3. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन, दिल्ली 9818115971, 9136248971
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली M.: 9811374961, 9818394651, 9811363613 E-mail : kavijain1982@gmail.com

जो शरण आपकी आता है, वह खाली हाथ न जाता है।
जो भक्तिभाव से गुण आता है, वह इच्छित फल को पाता है॥
हे दीनानाथ! अनाथों के, हम पर भी कृपा प्रदान करो।
तुमने मुक्ती पद को पाया, वह 'विशद' मोक्ष पद दान करो॥
हे आदिनाथ! तुमको प्रणाम, हे ज्ञानसरोवर! मुक्ति धाम।
हे धर्म प्रर्वतक! तीर्थंकर, शिवपद दाता तुमको प्रणाम॥

ॐ ह्रीं धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा आदिनाथ को आदि में, कोटि-कोटि प्रणाम।
विशद सिंधु भव सिंधु से, पाऊँ मैं शिवधाम॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

नोट : दीप प्रज्ज्वलन करना हो तो 48 मन्त्र इसी प्रकार बोलें।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मूल रचयिता—आचार्य श्री मानतुंग जी कृत

भक्तामर स्तोत्र प्रत्येकार्घ्य

(पद्यानुवाद-आचार्य श्री विशदसागर जी)

दोहा

वृषभनाथ वृषभेष जिन, हो वृष के अवतार।
तारण तरण जहाज तव, करो 'विशद' भवपार।।

—(इति मण्डलस्योपरिपुष्पा जलि क्षिपेत्)

(बसन्त तिलका छन्द)

भक्तामर-प्रणत मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकम्-दलित-पाप-तमो वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य-जिन-पाद -युगं-युगादा-
वालम्बनं - भवजले - पततां - जनानाम्।।१।।

(चौपाई)

भक्त अमर नत मुकुट छवि देय, गहन पाप तम को हर लेय।
भव सर पतित को शरण विशाल, 'विशद' नमन जिन पद नत भाल।१।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं ऋद्धि सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

मंगल कामना

जीयादशेष भव्यानां, प्रार्थितार्थ फलप्रदः।
'विशद स्तोत्र' पत्रोऽयं, कल्पशाखाग्र संगतः॥

अखिल भव्य जीवों के लिए अभीष्ट फल देने वाला कल्पवृक्ष की शाखा के अग्रभाग पर संलग्न **'भक्तामर स्तोत्र'** रूप पत्र जयवन्त हो।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्याः श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्याः जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्ते जयपुर स्थित पार्श्वनाथ नगरे एयर पोर्ट समीपे श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर स्थापना पञ्चकल्याणक पावन अवशरे वी. नि. 2542 कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदश्याँ सोमवार वासरे श्री भक्तामर विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात।

विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाला।।

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण।।
जिला छतरपुर कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी।।
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े।।
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया।।
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।